अदीब

(काव्य संग्रह)

• डॉ. वासिफ काज़ी

अदीब

(काव्य संग्रह)

डॉ.वासिफ क़ाज़ी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-68-1

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९मो९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ.वासिफ क़ाज़ी

मूल्य : ४०.००रुपये

आवरण चित्र : मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Adeeb' by 'Wasif Quazi'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है । लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं । अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार है । प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है । किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

रूबरू..... अल्फ़ाज़ दिल से

उत्कृष्ट साहित्य सृजन ही किसी व्यक्ति को,नेक इंसान बनाने का सशक्त माध्यम हो सकता है। सरल एवं सहज भाषा शैली का अपने काव्य में उपयोग कर रचनाकार, सम्माननीय पाठकों के दिल में अपना स्थान बना सकता है। मन एवं मस्तिष्क, दोनों की ही ख़ुराक उत्तम श्रेणी का साहित्य पढ़ना है। साहित्य ही मनोविकारों के रहस्यों का उदघाटन कर सदवृत्तियों को जागृत करने का सामर्थ्य रखता है। मेरे इससे पूर्व प्रकाशित हो चुके काव्य संग्रह "संकल्पना" में जहां अनेकता में एकता का उदघोष करते राष्ट्र की तस्वीर पेश की तो "आग़ोश" में रिश्तों एवं प्रेम के अटूट संबंधों का महिमा मंडन किया। साहित्य मनीषियों एवं प्रिय पाठकों (काव्य रसिकों) की समीक्षा एवं स्नेह की कसौटी पर ख़रा उतरने में मेरी दोनों पुस्तकें सफ़ल रहीं ।

काव्य यात्रा को गतिमान बनाए रखते हुए अपने तृतीय काव्य संग्रह के माध्यम से आपसे फ़िर रुबरु हो रहा हूं ।

"अदीब" जिसका राष्ट्र भाषा हिंदी में अर्थ विद्वान या साहित्यकार होता है अर्थात जो अपने जीवन काल में ज्ञानार्जन कर चुका है एवं अपने सुनियोजित ज्ञान एवं विवेक से, साहित्य को अपने सटीक लेखन के माध्यम से समृद्ध कर रहा हो, वही वास्तव में "अदीब" है।

साहित्य को संपूर्णता, उत्कृष्ट लेखन से ही प्राप्त हो सकती है एवं साहित्य के मर्म को समझें बिना यह कदापि संभव नहीं । जिसने साहित्य के मर्म को समझ लिया, वही अदीब है, जिसकी आत्मा में प्रेम, सुगंध की भांति समा गया हो ।

"अदीब" में मैंने प्रेम की अभिव्यंजना, अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर की है । "अदीब" एक सच्चे प्रेमी की ख़ोज है जो प्रेम को साहित्य में ख़ोज रहा है।

अतः सुधि पाठकों से अपेक्षा करता हूं कि "अदीब" को अपने स्नेहाशीष से पुष्पित और पल्लवित करें ।

मेरे शब्द नक्षत्रों को साहित्य आकाश में यथोचित स्थान प्रदान करने के लिए प्रकाशन टीम को साधुवाद ।।

भवदीय

डॉ वासिफ क़ाज़ी इंदौर

अनुक्रमणिका

1. हमसफ़र	5
2. प्रेमनगर	6
3. सुहानी सांझ	7
4. परछाईयां	8
5. चौदहवीं का चाँद	9
6. पहला प्यार	10
7. जुनून ए इश्क	11
8. चाँद तू मेरा है	12
9. तेरे बिन	13
10.तुझसे प्यार है	14
11.मदहोशी	15
12.प्यार नहीं है	16

हमसफ़र

मेरे हमसफ़र, मेरे हमनवां,
तुमसे है ज़िन्दगी मेरी ।
चाहत है तुम्हारे लिए,
तुमसे है धड़कनें मेरी ।।

तुम्हारे ख़तों की ख़ुशबू से,
अलमारी महकती है मेरी ।
सांसें चलती है तुमसे ही,
ज़िन्दगी निखरती है मेरी ।।

कभी जो तुमसे बिछड़ूं तो,
ख़ुद से बिछड़ जाऊंगा ।
तेरी आशिक़ी में हमदम,
हद से गुज़र जाऊंगा ।।

धड़कनों का सफ़र मुकम्मल तुमसे,
लुभाती है सादगी तेरी ।
तू ही मंदिर-मस्जिद-गिरजा मेरा,
तू ही इबादत, बंदगी मेरी ।।

प्रेमनगर

इश्क की बस्ती है यह,
यहां आशिक़ों के मकान मिलेंगे ।
जहां बहती नहीं हवा मोहब्बत की,
वहां सिर्फ उजड़े बियाबान मिलेंगे ।।

फ़लक पर रोशन है जहां चांद चाहत का,
वहां उम्मीदों के आसमान मिलेंगे ।
मेरे हाथों में होगा तेरा हाथ जब,
उसी वक्त हमें इबादतों के इनाम मिलेंगे ।।

कुछ न मिले दुनिया में तो,
मुझे कोई ग़म न होगा ।
तेरे लिए ज़िन्दगी में जानें-जां,
मेरा प्यार कम न होगा ।।

प्यार की दुनिया है यह,
यहां नहीं नफ़रतों के निशान मिलेंगे ।
यहां होता नहीं क़ारोबार दिलों का,
यहां इश्क में डूबे सुल्तान मिलेंगे ।।

परछाईयां

दिल के दरिया में तेरा अक़्स,
तेरी याद बनकर उभरता है ।
तेरे ख़्यालात करतें हैं बैचैन,
जैसे कोई दर्द दिल में ठहरता है ।।

यूं तो ज़िन्दगी है उथल-पुथल मेरी,
तुझसे ही हर लम्हा संवरता है ।
तेरा इश्क है वजह जीने की,
दर्द ए जुदाई में मन मेरा भटकता है ।।

ख़ुमारियां चाहत की असर करने लगी,
हर वक़्त दिल यूं ही मचलता है ।
परछाईयां उभरने लगी ज़ेहन में,
तेरे दीदार को दिल तड़पता है ।।

सरहदों से बंटें हैं मुल्क़ अपने,
मुश्क़ ए मोहब्बत से दिल महकता है ।
मत पूछ ज़ात सच्ची मोहब्बत की,
आशिक़ का दिल ऐसे ही धड़कता है ।।

सुहानी सांझ

इंतज़ार में गुज़रती है तेरे,
मेरी शामें आज भी ।
गुज़रतें हैं दिन तन्हा मेरे,
तेरे बिन आज भी ।।

ज़र्रा ज़र्रा रोशन है मेरा,
तेरे नूर से चमकता हूं ।
तेरी छूअन है पारस जैसी,
सांसों में इत्र सा महकता हूं ।।

यादों का शजर अब सूखने लगा है ,
अहसासों के फ़ूल मुरझायें है ।
सूना पड़ा है दिल का आसमान,
वहां उदासी की काली घटायें है ।।

तेरी मुलाक़ातों के गवाह है,
कई चांद रातें आज भी ।
भूलाकर नहीं भूल पाया हूं,
वो प्यारी बातें आज भी ।।

चौदहवीं का चाँद

आफ़ताब हो, महताब हो, आबे शबाब हो तुम ,
हसीन हो बेइंतहा कोई सुर्ख़ाब हो तुम ।
हो रोशन शमा इश्क की कोई,
मेरी नेक़ियों का बरसता शबाब हो तुम ।।

अल्फ़ाज़ नहीं मेरे पास कैसे बयां करूं,
दिल तुम्हे हर वक़्त क़रीब पाता है ।
तुम हो नाय़ाब चाँद चौदहवीं का,
जो कभी कभी नज़र आता है ।।

ग़िले शिक़वे भूलाकर मिल जाओ ज़रा ,
इश्क की राहों में इंतज़ार है मुझको ।
बेसब्रियां,बैचैनियां बढ़ा दी है दिल की,
क्यों ख़बर नहीं है तुमको ।।

सुबह की ख़ुमारी,शाम का इंतज़ार हो तुम ,
मेरे दिल का सब्र ओ क़रार हो तुम ।
लिख़ती है नाम प्यार से अंगुलियां तुम्हारी ,
मेरी ज़िन्दगी का पहला प्यार हो तुम ।।

जुनून ए इश्क

अधूरे इश्क के बहुत सारे फ़साने मिलेंगे ,
दुनिया में कई मजनू दीवाने मिलेंगे ।
हर आज़माईश से गुज़र जायेगा दिल,
यहां तुझें हम जैसे परवाने मिलेंगे ।।

जुनून ए इश्क है तेरे लिए,
पागलपन न समझना इसको ।
तेरे जिस्म में सांसें लेता हूं,
अंजान न समझना मुझको ।।

क़ितने मज़हब,क़ितने रंग हैं दुनिया में ,
चाहत का रंग ख़ुशरंग होता है ।
जो रंग जाए पिया के रंग में,
वही इश्क का रंग होता है ।।

मुझसे मिलने के तुझे कई बहाने मिलेंगे,
ख़्वाहिशों को मेरी ठिकाने मिलेंगे ।
इश्क को फ़ितूर में बदलना है मुझको,
धड़कन के सुरों को नये तराने मिलेंगे ।।

पहला प्यार

आज भी याद है मुझे,
ख़ुशी से खिल जाना तेरा ।
बारिश में भीगी सड़कों पर,
यूं अचानक मिल जाना तेरा ।।

ये कैसे मोड़ पर आ गया हूं,
तुझे पाकर सब कुछ पा गया हूं ।
ख़्वाहिशें है कि मिटती नहीं,
सब कुछ खोकर तुझे पा गया हूं ।।

मिल्क़ियत से कम नहीं होता,
किसी विरासत से कम नहीं होता ।
ख़लिश है पहले प्यार की यह,
बिछड़ कर भी यह कम नहीं होता ।।

आज भी याद है मुझे,
रूठ कर चले जाना तेरा ।
मचल जाना मेरे बुलाने पर,
भाग कर चले आना तेरा ।।

तेरे बिन

तेरे साथ गुज़ारे लम्हात,
मेरी क़ीमती जागीर है ।
तेरे मुस्कुराकर देख़ना ही,
मेरे ख़्वाबों की ताबीर है ।।

तेरे बिन अधूरा सा हूं ,
मंज़िलें नहीं मिलती है ।
निकलता हूं सफ़र पर,
मुझे राहें नहीं दिखती है ।।

पहली ख़ुशी ज़िंदगी की,
आख़िरी ग़म तू है ।
धड़कनों में मेरी धड़के,
एक सनम तू है ।।

दिल से खेलने में मेरे,
तू बहुत ही माहिर है ।
मेरे इश्क को मत परख़,
ये तो जगज़ाहिर है ।।

चांद तू मेरा है

मेरा चांद बहुत शर्मीला है ,
चांद रातों को भी दीदार नहीं होते ।
जो आ जाता तू एक बार आसमां में,
हर शब हम यूं बीमार नहीं होते ।।

तेरे इश्क की चांदनी में डूबे हैं,
अंधियारी रात के शिकार नहीं होते।
लुका छिपी तेरी आदत बन गई है,
तेरे इस खेल के हिस्सेदार नहीं होते ।।

वो चांद फ़लक पर इतराता बहुत है,
मेरा चांद जमीं पर इठलाता बहुत है
रुबरु होता हूं मैं उसके जब भी,
वो ख़ामोशी से मुस्कुराता बहुत है ।।

अदाओं से करता है वार मुझ पर,
पास मेरे हथियार नहीं होते ।
लिपटना चाहता है जब वो हमसे,
उस वक्त मग़र हम तैयार नहीं होते ।।

तुझसे प्यार है

दिल से जुदा नहीं है तू ,
मेरे ज़ेहन में तेरी यादें हैं ।
अधूरी हैं रस्में मोहब्बत की,
पतझड़ से ये तेरे वादे हैं ।।

हर सांस मुझे तेरा इंतज़ार है,
सच कहूं मुझे तुझसे प्यार है ।
अहसास ए इश्क सुखन देता है,
विसाल ए यार तो चुभन देता है।।

तेरे बिन तो ज़िन्दगी बेकार है,
सच कहूं मुझे तुझसे प्यार है ।
आशिकों से ही इश्क ज़िंदा है,
मिसालें उनकी दी जाती हैं ।।

मोहब्बत में कंजूसी नहीं होती,
ये तो ख़ुले दिल से की जाती है।
तेरे बिन कहां दिल को करार है,
सच कहूं मुझे तुझसे प्यार है ।।

मदहोशी

न कभी गये मयखाने हम,
न जाम होंठों से लगाया ।
जो एक झलक देखी तेरी,
ये कैसा नशा हम पर छाया ।।

मदहोशी के आलम में भी,
हम हर लम्हा तुझे सोचते रहे ।
दिल की गहराइयों में जानम,
शाम ओ सहर तुझे ख़ोजते रहे ।।

रक़ीब समझें या तुम्हें दोस्त अपना,
मेरे हमराज़ बस तुम्हीं हो ।
बिन तुम्हारे मल्हार भी बेनूर,
प्रेम गीत के साज़ तुम्हीं हो ।।

क़तरा क़तरा शामिल हो मुझमें,
मैं तुमको ढूंढ न पाया ।
भूला दी है दुनिया मैंने,
मैं तुमको भूल न पाया ।।

प्यार नहीं है

आते हो रोज़ ख़्वाबों में मेरे,
नींदें भी ग़ुस्ताख़ हुईं हैं ।
मेरी ज़िन्दगी की शामें भी,
तुमसे ही गुलज़ार हुईं हैं ।।

हर नज़र मेरी हर घड़ी,
तेरा इंतज़ार कर रही है ।
दुनिया कह रही है मुझे,
तुमसे प्यार नहीं है ।।

रोशन था चांद आसमां में,
तारों की बारात सजी थी ।
मेरी रूह, मेरी धड़कन में,
जानें जां तब से तू बसी थी ।।

तुम हो नाम ए वफ़ा मेरी,
क्या ग़लत क्या सही है ।
दुनिया कह रही है मुझे,
तुमसे प्यार नहीं है ।।

मत पूछो मज़हब हवाओं से,
दस्तूर है उनका चलना ।
बिछा दूंगा क़दमों में तारे,
हर मोड़ मुझे तुम मिलना ।।

ख़ो गया है सुकून दिल का,
पहलू में तेरे यहीं है ।
दुनिया कह रही है मुझे,
तुमसे प्यार नहीं है ।।।।

डॉ वासिफ काजी

जन्मतिथि: ५ अगस्त, १९८१
माता: श्रीमती शमा काजी
पिता: स्व.बदरूद्दीन काजी
पत्नी: श्रीमती शबाना काजी
जन्मस्थान: बड़वानी (म.प्र.)
प्रारंभिक शिक्षा: कुक्षी,जि.धार
शैक्षणिक योग्यता - एम.ए. (हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य), एम.एस-सी. (रसायन), ' हिंदी काव्य एवं कहानी की, वर्तमान सिनेमा में प्रासंगिकता विषय पर शोध-प्रबंध पूर्ण।
कार्यक्षेत्र: अध्यापन , शैक्षणिक कार्य एवं स्वतंत्र लेखन।
विधा: काव्य, गजल, आलेख एवं समीक्षा तंभकार के रूप में, फिल्म समीक्षक, कुशल मंच संचालक,प्रखर वक्ता ।

www.wasifquazi.blogspot.in

संक्षिप्त जीवन परिचय:- डॉ वासिफ काजी ,का जन्म म.प्र. के बड़वानी जिले में हुआ। बाल्यकाल , कुक्षी नगर में व्यतित कर प्रारंभिक शिक्षा, नगर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में प्राप्त कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर श्रेणी कीमहाविद्यालयीन शिक्षा बड़वानी एवं इंदौर में प्राप्त की। कुक्षी नगर में सात वर्ष तक हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी कक्षाओं में अध्यापन का कार्य भी कराया। सन् २००७ से इंदौर शहर की कई ख्यातनाम कोचिंग क्लासेस में एवं इस्लामिया करीमिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अनवरत कुशलता पूर्वक अध्यापन कराते हुए ज्ञान दायिनी मां सरस्वती की पुण्य आराधना कर रहे हैं।

काव्य कृति-: संकल्पना (मार्च २०१८), आगोश (मई २०१८)
अन्य विविध उपलब्धियां:
संभाग स्तरीय महाविद्यालयीन वाद विवाद एवं भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान। (२००१)
राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान (२००५)
भाषा सारथी सम्मान (२०१८)
साहित्य सृजन का उद्देश्य:विचारों का जन्म , गहन चिंतन एवं मनन से होता है। मानव मन भावनाओं एवं संवेदनाओं का महासागर है जिसकी अनन्त गहराईयों में शब्द रुपी मोतियों का अमूल्य भंडार है उन्हीं शब्द नक्षत्रों से एक साहित्यिक आभामंडल को मूर्तरूप प्रदान करने का लक्ष्य अंगीकार कर काव्यपथ की ओर कदम बढ़ाएं हैं। अपने काव्य सृजन का प्रमुख ध्येय , वैमनस्यता एवं साम्प्रदायिक अलगाव में डूबे मानव मन को प्रेम की पवित्रता और रिश्तों की गरिमा का अहसास कराना है। वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को जीवंत करने की कोशिश, काव्य के माध्यम से करने का प्रयास किया है।

संपर्क (भ्रमणभाष)-: ८०८५९०१०२१, ६२६०२३२३०९
अणुडाक: wasifquazi08@gmail.com | quaziwasif111@gmail.com
पता : २८/३/२, अहिल्या पल्टन, इंदौर

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
ISBN: 978-93-88102-68-1
₹40